आधुनिक भारत के जनक - राजा राममोहन राय

19 वीं सदी आधुनिक भारत के नवनिर्माण हेतु अनेक बौद्धिक धाराओं के आविर्भाव के लिए जाना जाता है। इसकी शुरुआत बंगाल से हुई जिसका नेतृत्व राजाराममोहन राय ने किया। इसी कारण राजाराममोहन राय को भारत के नवजागरण का अग्रदूत तथा सुधार आंदोलनों का पहला नेता कहा जाता है। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी राममोहन ने भारतीय राष्ट्रीय जीवन के लगभग सारे पहलुओं को उठाया और भारतीय राष्ट्र की पुनर्रचना के लिए संघर्ष किया।

'पूर्वाग्रहमुक्तता' राममोहन राय के व्यक्तित्व का शानदार गुण था। उनमें देश-काल-जाति-धर्म संबंधी पूर्वाग्रह का सर्वथा अभाव था। उन्होंने अतीत के धर्मग्रंथों का आश्रय लिया भी तो सिर्फ अपने बौद्धिक विचारों के पुष्टीकरण हेतु ताकि वे समाज में सहज ग्राह्य हो सके। उनकी वैचारिक स्पष्टता, पूर्वाग्रहमुक्तता एवं तर्कशील बौद्धिकता एक लंबे एवं गहन अध्ययनोपरांत विकसित हुई थी। संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, ग्रीक, हिब्रू सहित कई भाषाओं के माध्यम से उन्होंने समस्त धर्मों के मूल ग्रंथों का अध्ययन किया था तथा धर्मों में अन्तर्निहित सत्य का अन्वेषण किया था।

आधुनिक भारत की औपनिवेशिक चुनौतियों के मद्देनजर नवनिर्माण की आवश्यकता को उन्होंने गहराई से समझा। समाज एवं धर्म में व्याप्त अंधविश्वास एवं कुरीतियों को नष्ट किये बिना यह संभव नहीं था। उन्होंने जिन बुराइयों को लक्षित किया वे थीं—

समाज के क्षेत्र में – (1) नारीजगत जिसमें सती प्रथा, शिशु हत्या, विधवा एवं बाल-विवाह जैसी कुप्रथाएँ मौजूद थीं।
(2) जातिवाद एवं छुआछूत
(3) समाज के ज्ञानोदय हेतु आधुनिक शिक्षा का अभाव।

धार्मिक क्षेत्र में – (1) मूर्तिपूजा
(2) बहुदेववाद
(3) धार्मिक अंधविश्वास
(4) पंडितों द्वारा शोषण

इन सभी बुराइयों ने मिलकर भारतीय समाज

Scanned with CamScanner

की प्रगतिशीलता को अवरुद्ध कर दिया था। नारी समस्याओं के मूल में उन्होंने सम्पत्ति अधिकारों का अभाव देखा। जातिवाद एवं छुआछूत जैसी बाधाएँ किसी सामाजिक आदर्श से प्रेरित नहीं थी राष्ट्रीय एकीकरण में बाधक थी।

आधुनिक शिक्षा नवीन ज्ञान-विज्ञान के प्रचार का माध्यम बन सकती है- ऐसा राजा राममोहन का मानना था। एक ऐसे समय में जब समस्त विश्व आधुनिक यूरोपीय ज्ञान से आलोकित हो रहा था, भारत को इससे वंचित रखना भूल होती। इसे भारतीय सभ्यता-संस्कृति के विनाश से जोड़कर देखना गलत है। राममोहन इसीलिए तत्कालीन कम्पनी सरकार द्वारा संस्कृत कॉलेज तथा मदरसों की स्थापना को लेकर नाखुश थे। इसी क्रम में उन्होंने कलकत्ता में 1817 में डेविड हेयर के सहयोग से हिन्दू कॉलेज की स्थापना की जिसमें भारतीय तथा पाश्चात्य दोनों ही प्रकार के अध्ययनों की सुविधा थी। अंग्रेजी शिक्षा के साथ-2 स्थानीय भाषा के विकास को भी प्रोत्साहित किया। बांग्ला भाषा एवं साहित्य के विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। उन्होंने एक एवं एक बांग्ला व्याकरण का संकलन किया। उनके लेखन से बंगाल में एक सुन्दर गद्य शैली का जन्म हुआ।

राजा राममोहन राय ने लगभग सभी धर्मों का अध्ययन किया एवं इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सभी धर्म सत्य है लेकिन कर्मकांड उन्हें दूषित कर रहे हैं। अपनी पहली दार्शनिक कृति "तुहफ़त उल मुवाह्दीन (1805) में मूर्तिपूजा का विरोध किया तथा "एकेश्वरवाद" को सभी धर्मों का मूल बताया। अपने विषद ज्ञान व वैज्ञानिक तथा प्रगतिशील दृष्टिकोण का सहारा लेकर राममोहन हिन्दू धर्म में उत्पन्न कुरीतियों एवं आडम्बरों पर गहरा प्रहार किया। उपनिषदों के अध्ययन द्वारा इस बात पर बल दिया कि अद्वैतवाद हिन्दू धर्म का मूल है। 1815 में उन्होंने "आत्मीय सभा" तथा 1816 में 'वेदांत कोलाइटी' की स्थापना की। 1820 में 'प्रीसेप्टस ऑफ जीसस' नामक पुस्तक के जरिये न्यू टेस्टामेंट के नैतिक एवं दार्शनिक संदेश को उसकी चमत्कारिक कहानियों से अलग करने की कोशिश की। 1828 में उन्होंने 'ब्रह्म समाज' की स्थापना की जिसका उद्देश्य हिन्दू धर्म में सुधार लाना था।

राममोहन राय समाज के आन्तरिक विसंगतियों पर जबरदस्त प्रहार किया तथा तत्कालीन समय में व्याप्त जाति-प्रथा

Scanned with CamScanner

सती प्रथा, विधवा विवाह प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया। उनकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि 1829 में बैंटिंक के सहयोग से सती-प्रथा के विरुद्ध कानून बनवाने की रही। वे स्त्रियों के अधिकार के समर्थक थे। उन्होंने बहुविवाह का विरोध किया तथा औरतों को आर्थिक अधिकार देने का समर्थन किया।

राजा राममोहन राय भारतीय पत्रकारिता के अग्रदूत थे। उन्होंने स्वयं बंगाली पत्रिका "संवाद कौमुदी" का प्रकाशन किया। 1822 में फारसी भाषा में "मिरातुल अखबार" का प्रकाशन किया। 1826 में हिन्दी में "बंगदूत" नामक समाचार पत्र निकाला। 1833 में उन्होंने समाचार पत्रों के प्रतिबंध के विरुद्ध प्रबल आंदोलन चलाया। 1835 में समाचार पत्रों को मिलनेवाली स्वतंत्रता में इनका महत्वपूर्ण योगदान था।

राजा राममोहन राय ने राजनीतिक-आर्थिक समस्याओं को भी उठाया। उन्होंने सरकारी सेवाओं के भारतीयकरण, न्यायिक कार्यवाई तथा कार्यपालिका के पृथक्करण की वकालत की तथा नरलवाद एवं जमींदारी शोषण की आलोचना की। उन्होंने भारतीय वस्त्रों पर लगाये जाने वाले भारी निर्यात शुल्क हटाने की माँग की।

अपने रुझानों में राजा राममोहन राय अन्तर्राष्ट्रवादी एवं जनतांत्रिक विचारों के पोषक थे। अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं में इन्होंने गहरी दिलचस्पी दिखलाई तथा जगह-जगह स्वतंत्रता, जनतंत्र और राष्ट्रीयता के आंदोलन का समर्थन किया। 1821 में नेपल्स क्रांति की विफलता से बहुत दुखी हुये। 1823 में जब स्पेनिश अमेरिकी क्रांति सफल हुई तो इस खुशी को वे सार्वजनिक भोज देकर मनाया।

राजाराममोहन राय की वैचारिक अनुगूंज पूर्वी भारत से लेकर उनके सहयोगियों, परवर्तियों एवं अन्य प्रेरित व्यक्तित्वों तथा संगठनों के माध्यम से लगभग समस्त भारत में पहुँचा। वे समस्त भारतीय एवं पाश्चात्य चिंतन के संश्लिष्ट रूप थे। समुचित ही उन्हें आधुनिक भारत का जन्मदाता कहा जाता है।

Scanned with CamScanner